Sharir Rachana - 1

Study of RUJAKARA MARMAS

Scholar : Dr. U.Govind Raju

Guide : Prof. M.L. Bhardwaj

1983 : 196

Litrary and Practical studies are carried out to elaborate the knowledge of Rujakar Marmas through the clinical research. Anatomical co-relation of marmas in the light of modern practical anatomy was the aim of research.

By the litrary discussion the knowledge about the Rujakar marmas is concluded that they are –

1. Having Markatwa and with out any doubt they may be included in marmas.
2. They are "Panchbhoutik" but predominating "Vayu" and "Agni" gunas.
3. In the case of Rujakar Marmas Snayu & Sandhi are having vital importance.

शरीर रचना - 2

शुक्र विवेचनम्

अध्येता : डा. सदाशिव शर्मा

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

1983 : 175

शुक्रधातु एवं शुक्रकीट का रचनात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आर्ष साहित्य तथा शुक्र संबंधी अद्यतन विज्ञान ही अध्ययन का आधार रहा।

धातुपोषण क्रम के अन्तर्गत मज्जाधातु से उत्पन शुक्रधातु रक्तगत होकर सर्वशरीर में व्याप्त रहता है।

मैथुन अवस्था में प्रवृत्त शुक्र, धातु रूप सर्वशरीरगत शुक्र का उत्पादक अंश है।

स्त्री शरीर में बार्थोलिन ग्रन्थियों (Bartholin Glands) के स्राव को शुक्रधातु मानना उचित है, इसी कारण स्त्री शरीर में शुक्रवह स्त्रोतस् का मूल स्थान स्तन निर्दिष्ट है तथा पुरूषों में वृषण को शुक्रवह स्त्रोतोमूल माना गया है।

शरीर रचना - 3

सद्यः प्राणहरमर्म समीक्षा – सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन

अध्येता : डा. महेशचन्द्र अग्रवाल

निर्देशक : प्रो0 मोहनलाल भारद्वाज

1983 : 203

सद्यः प्राणहरमर्मों का साहित्य समीक्षात्मक अध्ययन एवं प्रयोगात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

मेडिकल ज्यूरिस्प्रूडेन्स विभाग, एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज जयपुर के जनवरी 83 से जुलाई 83 तक की अवधि में प्राप्त मृत्यूत्तर अभिलेख का संकलन एवं आयुर्वेदीय समीक्षा ही अध्येता का आधार है।

सद्यः प्राणहर मर्माहत 50 व्यक्तियों में मारकत्व निर्धारण निम्न रहा।

शंख प्रदेश में मर्माहत – 26 व्यक्ति–संन्यास, रक्तस्त्राव के साथ 12 घण्टे से 48 घण्टे में मृत्यु ग्रस्त हुये।

हृदयाघात से 6 व्यक्ति – 1 घण्टे से 72 घण्टे में मृत्यु।

मातृका मर्म – 3 मर्माहत – रक्तस्राव व संन्यास से 7 दिन में मृत्यु।

अधिपति मर्म–11 व्यक्ति–संन्यासावस्था में 4 दिन रहने के पश्चात् मृत्यु।

शरीर रचना - 4

शिरा शारीर वर्णनान्तर्गत–शाखागत वेध्य शिराओं का अध्ययन

अध्येता : डा. पत्तासिंह सोलंकी

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

1983 : 211

सुश्रुतोक्त वेध्य शिराओं के व्यावहारिक ज्ञान हेतु विषय चयन किया गया।

शवच्छेदन के द्वारा वेध्य शिराओं का स्वरूप ज्ञान किया गया।

आचार्यों ने शिरावेध सम्बन्धी अध्यायों में वेध्य स्थानों का नामतः निर्देश तो किया है, किन्तु तत्रस्थ रचनाओं विशेषतः शिराओं का वर्णन उपलब्ध नहीं है, जिससे निःसंशय होकर शिरावेध का प्रत्यक्षीकरण एवं प्रयोग करना सम्भव नहीं है।

शरीर रचना - 5

हृत्विवेचनम्

अध्येता : डा. दीपनारायण तिवाडी

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

1983 : 150

सुश्रुतोक्त ''हृदयं चेतनास्थानम्'' का रचनात्मक अध्ययन एवं चेतना स्थानत्व पुष्टि के लिए ही महानिबंध का विषय चयन किया गया है।

आर्ष वचनों का अद्यावधि संकलन कर, हृदय का शवच्छेदन अध्ययन का आधार है।

सुश्रुत के चेतनास्थान हृदय तथा चरक के अर्थेदशमहामूलीय में संदर्भित हृदय संभवतः क्रमशः उरः स्थित एवं शिरोस्थित हृदय है, किन्तु–हृदय की स्वायम्भुव गतियां एवं संकोच विकास क्रम रसरक्त संवहन क्रियायें ही चेतनावाली है।

शिरःस्थ हृदय का शवच्छेदनात्मक प्रत्यक्ष संभव नही हुआ है, किन्तु–उरःस्थ हृदय का प्रत्यक्ष ज्ञान शवच्छेदन से होता है।

शरीर रचना - 6

प्राण एवं प्राणायतनों का विवेचनात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. गौरीशंकर इन्दोरिया

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

1985 : 192+5

प्राण एवं प्राणायतनों का शरीर ज्ञान एवं भ्रान्त धारणाओं का निराकरण ही महानिबंध का उद्देश्य है।

आयुर्वेद शास्त्र के प्राण सम्बन्धी अंशों का संकलन एवं प्राणायतनों को शवच्छेदनात्मक आधार पर पुष्ट किया गया।

विभिन्न आचार्यों ने 13 अंगावयवों की गणना प्राणायतन के अन्तर्गत की है, जिनमें से 8 अंगावयव असंदिग्ध रूप से स्पष्ट हैं, 5 संदिग्ध अवयवों में 2 शंख, नाभि, मांस तथा जिह्वा बंधन है।

अध्ययन के अन्तर्गत शंख प्रदेश के शवच्छेदनात्मक ज्ञान से अनुशंखा उत्तान धमनी, मस्तिष्क वृत्तियां धमनी एवं शंखानुगा रसायनी नाड़ी होने से इसका प्राणायतन होना सिद्ध है।

शिशु पोषणार्थ नाभिस्थ नाड़ी भी प्राणायतन है, मांस को प्राणायतन मानना युक्ति युक्त नहीं है। जिह्वा बंधन महत्वपूर्ण रचना तो है, किन्तु–इसका प्राणायतन तत्व सिद्ध नहीं होता है।

शरीर रचना - 7

स्रोतो शरीरान्तर्गत–अन्नवह स्रोतस् विवेचनम्

अध्येता : डा. मुरारी लाल भारद्वाज

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

1985 : 158

अन्नवह स्रोतस् का शवच्छेदनात्मक प्रत्यक्ष विवेचन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

शोध प्रबन्ध शवच्छेदनात्मक ज्ञान पर आधारित है।

स्रोतस् शब्दान्तर्गत केपिलरीज, प्रणालिकायें, रक्तवाहिनियां एवं संस्थान का ग्रहण किया जा सकता है।

अन्नवह स्रोतस् मुख से प्रारम्भ होकर मुखगुहा, अन्न नलिका, आमाशय, सम्पूर्ण क्षुद्रान्त्र एवं उण्डुक पर्यन्त माना जाना उचित ही है। रसांकुरिकाओं का समावेश भी इसके अन्तर्गत किया जाना चाहिये।

शरीर रचना - 8

शरीर रचना दृष्ट्या–नाभि विवेचन

अध्येता : डा. रामावतार बीलवाल

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

1985 : 173

नाभि विनिश्चय, संदिग्धता निवारण एवं नाभि का रचनाशरीर परक ज्ञान ही महानिबंध का उद्देश्य है।

अग्रपत्रक से भगसंधानिका तक, पूर्वोर्ध्वकूट से जघन धारा के सहारे पीछे तक अनुप्रस्थ छेदन तथा पूर्वोर्ध्वकूट से मध्य रेखा की ओर अनुप्रस्थ छेदन कर नाभि प्रत्यक्ष करने के लिये शवच्छेदन किया गया।

सुषुम्ना काण्ड का कटि प्रदेश, नाभि प्रदेश स्थित मणिपूरक चक्र, जिसके प्लेक्सस में मुख्यतः फ्रेनिक, सुप्रारीनल, रीनल, हिपेटिक, सुपीरियर मेसेन्ट्रिक, एब्डोमिनल एओर्टिक और इनफीरियर मेसेन्ट्रिक प्लेक्सस है, उसे ही नाभि प्रदेश कहना उचित है।

शरीर रचना - 9

क्लोम परिज्ञानम्

अध्येता : डा. बृजबल्लभ शर्मा

निर्देशक : प्रो0 मोहनलाल भारद्वाज

1985 : 174+4

क्लोम का आवयाविक ज्ञान, संदिग्धता निवारण एवं शवछेदनात्मक प्रत्यक्ष ही महानिबंध का उद्देश्य है।

शवच्छेदन द्वारा क्लोमान्तर्गत 18 संधियों का प्रत्यक्ष किया गया।

पित्ताशय, श्वासनलिका, फुफ्फुस, अग्न्याशय, पिपासा स्थान, बोरोरिसेप्टर्स व ओस्मोरिसेप्टर्स क्लोम से भिन्न अवयव प्रतीत होते हैं।

रसप्रपा, रसकुल्या और क्लोम नाड़ी को संयुक्त रूप से क्लोम मानना उचित है।

शरीर रचना - 10

मर्म शरीरान्तर्गत–कालान्तर प्राणहर मर्म विवेचन

अध्येता : डा. बिशनचन्द्र सैनी

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

1985 : 207

कालान्तर प्राणहर मर्मों का शास्त्रीय व प्रायोगिक विश्लेषण के साथ शरीर रचनात्मक ज्ञान ही महानिबंध का उद्देश्य है।

सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज, जयपुर के मेडिकल ज्यूरिस्प्रूडेन्स विभाग से मृत्यूत्तर अभिलेखों से एकत्रित आंकड़ों द्वारा तथा शवच्छेदन द्वारा कालान्तर प्राणहर मर्म का विनिश्चिय किया गया।

1–1–1984 से 31–3–1985 के मध्य के आंकड़ों में आयुर्वेदोक्त कालान्तर प्राणहर मर्म के 37 मृतक अभिलेख मिले।

इनमें से 16 की मृत्यु 15 से 30 दिनों में हुयी, 3 की मृत्यु 31 से 50 दिनों के बीच, 14 की 8 से 11 दिन के मध्य तथा 4 की मृत्यु 12 घण्टे से 6 दिनों की अवधि में हुयी।

उपरोक्त सभी मृतकों में आघात स्थान आयुर्वेद में वर्णित कालान्तर प्राणहर मर्म के स्थान ही रहे।

शरीर रचना - 11

दर्शनेन्द्रिय (नेत्र) विवेचन

अध्येता : डा. सुरेन्द्र कुमार

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

1986 : 169

दर्शनेन्द्रिय के आयुर्वेदीय एवं आधुनिक शरीर रचनात्मक वर्णन का तुलनात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

ज्ञानेन्द्रियों के आयुर्वेदीय शरीर रचनात्मक ज्ञान का यावन्मात्र ग्रन्थों से संकलन ही अध्ययन का आधार है। साथ ही आधुनिक ज्ञान का अध्ययन करने पर अध्येता द्वारा प्रदत्त निष्कर्ष है कि – क्रियात्मक एवं रचनात्मक ज्ञान के संदर्भ आयुर्वेद सम्मत ज्ञान का वृहत्तर विवरण ही आधुनिक विज्ञान में उपलब्ध होता है। दर्शनेन्द्रिय विषयक आधुनिक विवरण आयुर्वेदीय निर्वचन का अनुवाद मात्र प्रतीत होता है।

शरीर रचना - 12

त्वक् विवेचन

अध्येता : डा. सुरेश पाल

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

1986 : 162

त्वचा के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए रचनात्मक प्रत्यक्ष ज्ञान एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन से आयुर्वेदीय विषय को पुष्ट करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य बताया गया है।

विभिन्न आर्ष वचनों का संकलन कर नव्य मतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। चरक एवं वाग्भट के अनुसार त्वचा के 6 स्तर हैं, जबकि–सुश्रुत मतानुसार 7 स्तर हैं, और नव्य वैज्ञानिक भी त्वचा के 6 ही स्तर मानते हैं। सुश्रुतोक्त मांस स्तर को त्वगन्तर्गत ग्रहीत करना समीचीन नहीं है।

त्वचा स्तर के नामकरण, प्रमाण एवं कार्य दृष्ट्या आयुर्वेदीय संहिताओं में उपलब्ध विवेचन और नव्य वैज्ञानिकों द्वारा आविष्कृततम् ज्ञान में अद्भुत साम्य दृष्टिगोचर होता है।

शरीर रचना - 13

आर्तववह स्रोतस् का रचनात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. उषा जैन

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

1986 : 146

आर्तववह स्रोतस् के रचनात्मक अध्ययन से परिवार नियोजन में योगदान की सम्भावनाओं का पता लगाने के लिए ही महानिबन्ध का विषय चयनित किया गया है।

स्त्री श्रोणि का Saggital Section से 11 रचनाओं का शवच्छेदनात्मक प्रत्यक्षीकरण ही अध्ययन का आधार है।

परिवार नियोजन सम्बन्धी अंशों का प्राचीन संहिताओं से अद्यतन साहित्य तक संकलन किया गया है। जिनमें संतति निग्रह की 1 स्थायी और 10 अस्थायी विधियाँ अध्येता ने हानि लाभ विवेचन के साथ प्रस्तुत की है।

संतति निरोध हेतु बाह्य एवं आभ्यन्तर औषध प्रयोग के रूप में आयुर्वेदीय औषधियों की सूची भी अध्येत्री ने संलग्न की है।

शरीर रचना - 14

गर्भोत्पादक तत्वों का रचनात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. कुसुमलता
निर्देशक	:	प्रो. मोहनलाल भारद्वाज
1987	:	177

प्रजोत्पादन एवं प्रजानिरोध प्रक्रिया में सहकारी तत्वों का रचनात्मक एवं संकलनात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का हेतु है।

गर्भधारण योग्य शुक्र एवं शोणित का भौतिक, रासायनिक एवं अणुवीक्षणीय अध्ययन तथा स्त्री शरीर के प्रजननांगों का शवच्छेदनात्मक ज्ञान ही अध्ययन का आधार है।

प्रस्तुत महानिबन्ध में वस्तुतः जो कार्य पद्धति निश्चित की गयी है, वह पूर्ण नहीं की गयी। बल्कि–शुक्र शोणित एवं स्त्री प्रजननांगों का सैद्धान्तिक संकलन विस्तार से किया गया है।

संतति निरोध हेतु भी किसी प्रकार का प्रायोगिक अध्ययन नहीं किया गया है।

शरीर रचना - 15

श्रवणेन्द्रिय (कर्ण) विवेचन

अध्येता	:	डा. ब्रजेश कुमार शर्मा
निर्देशक	:	प्रो. मोहनलाल भारद्वाज
1987	:	215

कर्ण शरीर के आयुर्वेद एवं नव्य विवेचन का तुलनात्मक अध्ययन एवं आयुर्वेदीय विषय का पोषण ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

विस्तृत रूप से कर्ण शरीर विषयक उभयमत संकलन ही अध्ययन का आधार है।

भ्रूणीय विकास की दृष्टि से तृतीय मास में कर्ण की उत्पत्ति, कर्णसन्धान विधि, कर्ण की 10 शिरायें, शब्द वाहिनी शिराओं से रक्तमोक्षण निषेध इत्यादि विषयांशों को संकलित किया गया है।

बाह्य कर्ण की रचना नव्य वैज्ञानिकों ने आयुर्वेदीय वर्णन के समान ही बतायी है, किन्तु अन्तः एवं मध्य कर्ण के वर्णन का आयुर्वेद में वर्णन उपलब्ध नहीं है, इसे नव्य विज्ञान से ग्रहण करना उपयुक्त है।

शरीर रचना - 16

मूत्रवह स्रोतस् का रचनात्मक विवेचन

अध्येता	:	डा. ब्रजेश कुमार मुद्‌गल
निर्देशक	:	प्रो. मोहनलाल भारद्वाज
1987	:	169

मूत्रवह स्रोतस् का तुलनात्मक एवं शारीर रचनात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आर्ष साहित्य का संबंधित संकलन एवं शवच्छेदनात्मक प्रत्यक्षीकरण ही अध्ययन का आधार है।

आयुर्वेद में मूत्र की उत्पत्ति के विषय में विवादास्पद अवधारणायें मिलती हैं, किन्तु मूत्रवह स्रोतस् एवं उनके मूलस्थान के बारे में शास्त्र निर्देश नव्य विवेचन से साम्य रखते हैं।

विस्तृत रचनात्मक एवं क्रियात्मक ज्ञान हेतु नव्य अनुसंधान द्वारा स्थापित साहित्य का ग्रहण आयुर्वेद में करना उचित एवं अनिवार्य है।

शरीर रचना - 17

रक्तवह स्रोतस् – एक समीक्षात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. गम्भीर सिंह

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

1987 : 171

रक्तवह स्रोतस् के रचनात्मक ज्ञान से आयुर्वेदीय वाङ्मय की पुष्टि करना ही अध्ययन का उद्देश्य है।

संबंधित आर्ष साहित्य का संकलन तथा नव्य मतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

रक्तवह स्रोतस् एवं उनके मूल स्थान निर्देश के साथ ही सुश्रुत ने सिरा धमनी को इन स्रोतस् से पृथक् माना है। इसका कारण शल्य की दृष्टि से विशेष महत्व होने की वजह से इसका पृथक् अध्याय में वर्णन विस्तार से किया जाना अपेक्षित था। अन्यथा रक्तवह स्रोतो मूल यकृत्प्लीहा एवं संवहन तंत्र के रूप में सिरा धमनी ग्राह्य है।

नव्य वैज्ञानिकों ने रक्त उत्पत्ति स्थान अस्थिगत मज्जा को माना है, जिसका संकेत आचार्य वाग्भट ने किया है।

शरीर रचना - 18

प्राणवह स्रोतस् विवेचन

अध्येता : डा. विजय बहादुर

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

1988 : 163

प्राणवह स्रोतस् के रचना शरीर का शवच्छेदनात्मक ज्ञान करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

प्राणवह स्रोतस् नासापुट से प्रारम्भ होकर उरः कोष्ठ पर्यन्त व्याप्त वायु को अभिवहन करने वाले स्रोतस् हैं। अर्थात् गल या कण्ठ प्रदेश से प्रारम्भ तरूणास्थिमय श्वास प्रश्वास नलिका जो फुफ्फुस के अन्तः शरीर तक फैली है वह सब प्राणवह स्रोतोऽन्तर्गत ही है।

इसके अतिरिक्त फुफ्फुस से हृदय तक व्याप्त रक्तवाहिनियां तथा उसकी शाखा प्रशाखायें भी प्राणवह स्रोतस् ही है, ऐसा मानना चाहिये।

शरीर रचना - 19

शव संरक्षण विधि

अध्येता : डा. मधु चौहान

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

सह निर्देशक : डा. जितेन्द्र कुमार भार्गव

1988 : 198

आर्ष वचनों को वैज्ञानिकता प्रदान करने हेतु आयुर्वेदोक्त शव संरक्षण विधि का प्रायोगिक ज्ञान करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

शव संरक्षण हेतु मेंढक के शव को तिल तैल में कृमिघ्न, विषघ्न एवं धूपन द्रव्यों (रक्त चन्दन, अगर, हल्दी एवं नीम) के द्वारा संरक्षित किया गया।

तिल तैल में मेढक शव संरक्षण के परिणामस्वरूप 21वें दिन हल्की दुर्गन्ध आने लगी। 35 दिन बाद दुर्गन्ध बढने लगी। 50वें दिन से शव की आकृति में गलन प्रारम्भ हुआ। 90वें दिन शव पूरी तरह विकृत हो चुका था।

गंधक साधित तैल में शव मात्र 17वें दिन ही पूर्ण क्षत विक्षत हो गया।

बायविडंग चूर्ण के द्वारा शव 15 दिन तक पूरी तरह सुरक्षित रहा। रक्त चंदन के प्रयोग से 19 दिन तक सुरक्षित रहा। हरिद्रा चूर्ण से 16 दिन तक संरक्षण हुआ । अगरू चूर्ण से 20 दिन तक सुरक्षित रहा।

बायविडंग क्वाथ से 6 दिन, रक्त चन्दन क्वाथ से 10 दिन, हरिद्रा क्वाथ से 4 दिन तक शव सुरक्षित रहा। शुद्ध जल में 3 दिन में शव विगलित हो गया।

निष्कर्ष अध्येता ने प्रस्तुत नहीं किया है।

शरीर रचना - 20

आर्तववह स्रोतस्–शरीर रचनात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. अलका त्यागी

निर्देशक : प्रो. मोहनलाल भारद्वाज

सह निर्देशक : डा. रामप्रसाद मिश्रा

1988 : 194

प्राच्य एवं प्रतीच्य मत से शुद्धार्तव परीक्षण तथा रक्तवह तथा आर्तववह स्रोतस् में शवच्छेदनात्मक विभेद ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आर्तव इतिवृत्त, प्रयोगशालीय आर्तव परीक्षण तथा स्त्री प्रजननांगों का शवच्छेदनात्मक प्रत्यक्ष ही अध्ययन का आधार है।

स्त्री शरीर में गर्भाशयिक नाड़ी चक्र, योनि चक्र व बीज कोष चक्र का शवच्छेदन किया गया।

वयस्क स्त्री में 11 से 14 वर्ष की औसत आयु में प्रारम्भ होने वाला 3 से 5 दिन तक रहने वाला ईषत्कृष्ण वर्ण का गुंजाफल, कमल पुष्प, आलक्तक, लाक्षारस व शशासृक् इत्यादि प्राकृत वर्ण युक्त मासिक स्राव ही आर्तव है।

आर्तव चक्र की अधिकतम अवधि 26 से 30 वर्ष तक देखी गयी।

आर्तव का संगठन 66.6 प्रतिशत रक्त, 8.6 प्रतिशत कैल्शियम, पी.एच. 7.9 से 8.4 तक रहता है।

शवच्छेदनात्मक ज्ञान का वर्णन अध्येत्री ने प्रस्तुत नहीं किया है।

शरीर रचना - 21

स्रोतो शरीरान्तर्गत पुरीषवह स्रोतो विवेचन

अध्येता : डा. विजेन्द्र कुमार अग्रवाल

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

सह निर्देशक : डा. जितेन्द्र कुमार भार्गव

1989 : 157

पुरीषवह स्रोतस् का शवच्छेदनात्मक प्रत्यक्षीकरण ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

वक्षोस्थि के अग्रपत्रक से भगसंधानिका तक अनुलंब छेदन, प्रथम छेदन के ऊपरी सिरे से पार्श्व में अनुप्रस्थ छेदन, भगसंधानिका की ऊर्ध्वधारा वंक्षणस्नायु के सहारे पूर्वोर्ध्वकूट तक तिर्यक् छेदन किया गया।

महास्त्रोतस् का अन्तिम भाग अर्थात् उण्डुक, कोलन के विभिन्न भाग, सिग्मायड कालन, मलाशय तथा गुद को, पुरीषवह स्रोतस् माना जाना उपयुक्त है।